JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण के कथा संहिता स्रोत एवं ऐतिहासिक संस्करण का अध्ययन

Srinivasa Ramanuja[1], Dr. Sushma Rani[2]

[1]Research Scholar, OPJS University, Churu Rajasthan
[2]Research Supervisor, OPJS University, Churu Rajasthan

सारांश

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध वाल्मीकीय रामायण एवं रामकथाश्रित नाटकों में हनुमान रू एक समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत वाल्मीकीय रामायण एक आदर्श महाकाव्य है जो एक ओर जहाँ रचनाकार के हस्तलाघव को व्यक्त करता है वहीं दैवी शक्तियों से आप्लावित चरित्रों को इस काव्य के माध्यम से व्यक्त करता है। रामायण महाकाव्य के अन्तर्गत बालकाण्ड में जहाँ श्रीराम की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है वहीं अयोध्याकाण्ड में अयोध्या के प्रसाद परम्परा का भी वर्णन मिलता है तथा सुन्दरकाण्ड में हनुमान का वीरत्व तथा अरण्यकाण्ड में वन एवं वहाँ की संघर्षपूर्ण स्थिति का वर्णन प्राप्त होता है । किष्किन्धाकाण्ड में महर्षि ने मैत्री एवं निष्ठा, भक्ति की परम्परा को जीवंत किया है, आगे इन्होने युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड में रावण वध, विभीषण अभिषेक से लेकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के राज्याभिषेक से लव कुश प्रसंग तक की कथा का वर्णन अपनी दूरदर्शी एवं मौलिक प्रवृत्ति से की है।

मुख्यशब्द– रामायण, कथा संहिता स्रोत, ऐतिहासिक संस्करण, रामकथाश्रित नाटक, हनुमान, अयोध्याकाण्ड

प्रस्तावना

वाल्मीकि रामायण के प्रकरण में आजकल भिन्न–भिन्न मत द्रष्टव्य हैं। यद्यपि रामायण के अन्तरङ्ग प्रमाणों तथा वाह्य कारणों पर भी विचार करने से रामायण श्रीराम के ही समय का बना सिद्ध होता है । तथापि कुछ लोग इसे ईस्वी सन से दो चार शताब्दी की कृति मानते हैं। इसके पद विन्यास आदि को देखकर कोई पाणिनि के बाद की रचना कहता है तो कोई महाभारत के बाद की । वाल्मीकि ने स्वयं रामायण के उत्तरकाण्ड में, श्रीराम के यज्ञ में अपने हष्ट–पुष्ट दो शिष्यों अर्थात् कुश और लव से कहाकृतुम दोनों भाई एकाग्रचित्त हो सब ओर घूम–फिर कर बड़े आनन्द के साथ सम्पूर्ण रामायण काव्य का गान करो । इससे

सिद्ध होता है कि रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के समय में ही की थी। यह भी प्रसिद्ध है कि महर्षि व्यास जी ने युधिष्ठिर के अनुरोध से वाल्मीकि रामायण पर एक व्याख्या लिखी है। इसकी हस्तलिखित एक प्रति आज भी प्राप्त है जिसका नाम श्रामायणतात्पर्यदीपिकाश है । इसका उल्लेख दीवान बहादुर रामशास्त्री ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन रामायणश के द्वितीय खण्ड में किया है । अग्निपुराण में भी वाल्मीकि के नामोल्लेखपूर्वक रामायण सार का वर्णन है ।

महाभारत के द्रोण एवं शांति पर्व के रामोपाख्यान में द्रौपदी हरण और उसकी प्राप्ति से सन्तप्त युधिष्ठिर को उनकी इच्छानुसार मार्कण्डेय उनको रामचरित सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त रामायण एवं महाभारत के सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर भी रामायण महाभारत से पूर्ववर्ती सिद्ध होता है ।

वाल्मीकि पाणिनि के पूर्ववर्ती थे या परवर्ती इस विषय में मतभेद है। यदि वाल्मीकि पाणिनि से पूर्ववर्ती थे तो उनका उल्लेख पाणिनि को करना चाहिए था । क्या यह सम्भव है कि सर्वोत्कृष्ट काव्यकर्ता वाल्मीकि को विस्मृत किया जा सकता है ? इस सम्बन्ध में याकोबी विस्तृत वर्णन करते हुए वाल्मीकि को पाणिनि का पूर्ववर्ती ही मानते हैं । वाल्मीकि पूर्ववर्ती इसलिए थे कि पाणिनि ने कौशल्या, कैकय, सरयू आदि का उल्लेख किया है किन्तु वाल्मीकि एवं रामायण का नहीं । यदि वाल्मीकि परवर्ती थे तो उन्होंने पाणिनि के व्याकरण नियमों का पालन क्यों नहीं किया ?श कृर्मि एवं दुंदुभि का अपाणिनीय प्रयोग क्यों किया? इसके समाधान में कहा है कि ऋषि किसी नियम से बद्ध नहीं होता। उस समय संस्कृत भाषा अधिक रूढ़िग्रस्त न रही होगी । दुंदुभि तथा कृर्मि जैसे प्रयोगों को अशुद्ध न समझा जाता रहा होगा।

स्कन्दपुराण में श्रीव्यासदेव जी ने वाल्मीकि की जीवनी भी बड़ी श्रद्धा से लिखी है । विस्तृत रूप से आध्यात्म रामायण के अयोध्याकाण्ड में वाल्मीकि रामायण का वर्णन किया गया है । भार्गवसत्तम कहकर मत्स्यपुराण में भी वर्णन किया गया है । कवि कुलगुरु ने रघुवंश में आदिकवि का स्मरण किया है ।

वेद जिस परमतत्त्व का वर्णन करते हैं, वही श्रीमन्नारायण तत्त्व श्रीमद्रामायण में श्रीरामरूप से निरूपित है । वेद वेद्य परमपुरुषोत्तम के दशरथनन्दन श्रीराम के रूप में अवतीर्ण होने पर साक्षात् वेद ही श्रीवाल्मीकि के मुख से श्रीरामायण रूप में प्रकट हुए, ऐसी आस्तिकों की चिरकाल से मान्यता है । इसलिए श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की वेदतुल्य ही प्रतिष्ठा है। यों भी महर्षि वाल्मीकि आदिकवि हैं अतरू समस्त विश्व के कवियों के गुरु हैं। उनका आदिकाव्य श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण भूतल का प्रथम काव्य है । वह सभी के लिए पूज्य वस्तु है। भारत के लिए वह परम गौरव की वस्तु है ओर देश की सच्ची बहुमूल्य राष्ट्रीय निधि है । इस नाते भी वह सबके लिए संग्रह, पठन, मनन एवं श्रवण करने की वस्तु है।

इसका एक एक अक्षर महापातक का नाश करने वाला हैकृ

एकैकमक्षरं पुंसा महापातकनाशनम् ।

यह समस्त काव्यों का बीज है।

श्काव्यबीजं सनातनम् ।

श्रीव्यासदेवादि सभी कवियों ने इसी का अध्ययन कर पुराण, महाभारतादि का निर्माण किया । वृहद्धर्मपुराण में यह बात विस्तार से प्रतिपादित है। श्रीव्यास जी ने अनेक पुराणों में रामायण का महात्म्य गाया है। स्कन्दपुराण का रामायणमाहात्म्य तो इस ग्रन्थ के आरम्भ में दिया ही है, कई छिट–पुट महात्म्य अलग भी हैं। यह भी प्रसिद्ध है कि व्यास जी ने युधिष्ठिर के अनुरोध पर एक व्याख्या वाल्मीकि रामायण पर लिखी थी और उसकी एक हस्तलिखित प्रतिलिपि अब भी प्राप्य है । भवभूति को करुण रस का आचार्य माना गया है, किन्तु हम देखते हैं कि उन्हें इसकी शिक्षा आदिकवि से ही मिली है वे भी उत्तररामचरित के दूसरे अंक में आदि से उन्हीं का स्मरण करते हैं । 'सुभाषित पद्धति के निर्माता शाङ्र्गधर उनके इस ऋण को स्पष्ट व्यक्त करते हुए लिखते हैं

कवीन्द्र नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणीकथाम् ।

चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

इसी तरह महाकवि भास, आचार्य शङ्कर, रामानुजादि सभी सम्प्रदायाचार्य, राजा भोज आदि परवर्ती विद्वानों से लेकर हिन्दी साहित्य के प्राण गोस्वामी तुलसीदास जी तक नेकृ श्बंदऊँ मुनि पद कंज रामायन जेहिं निरमयऊ।श जान आदिकवि नाम प्रतापूश, वाल्मीकि भये व्याधतें मुनिंदु साधु मरा मराश जपें सिख सुनि रिषि सातकीश (कवितावली, उत्तरकाण्ड १३८–१४०) कहत मुनीस महेश महातम उलटे सीधे नाम को श महिमा उल्टे नाम की मुनि कियो किरातो ।श (विनयपत्रिका १५१), उलटा जप कोलते भए ऋषिराव (बरवै रामा० १५१) 'राम बिहाई मरा जपते बिगरी सुधरी कबि कोकिलहू कीश (कवि० ७/८८) इत्यादि पदों से इनका बार–बार श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है, कृतज्ञता ज्ञापन की है।

महर्षि वाल्मीकि जी को कुछ लोग निम्न जाति का बतलाते हैं। पर वाल्मीकि रामायणश तथा अध्यात्म रामायण में इन्होंने स्वयं अपने को प्रचेता पुत्र कहा है। मनुस्मृति में प्रचेता को वशिष्ठ, नारद, पुलस्त्य, कवि आदि का भाई लिखा है । स्कन्दपुराण वैशाख माहात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याध बतलाया गया है। इससे सिद्ध है कि जन्मान्तर में ये व्याध थे । व्याध जन्म के पहले भी ये स्तम्भ नाम के श्रीवत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे । व्याधजन्म में शङ्ख ऋषि के सत्सङ्ग से, रामनाम के जप से ये दूसरे जन्म में अग्निशर्मा (मतान्तर से

रत्नाकर) हुए। वहाँ भी व्याधों के संग से कुछ दिन प्राक्तन संस्कारवश व्याध कर्म में लगे। फिर, सप्तर्षियों के सत्संग से मरा मरा जपकर बांबी पड़ने से वाल्मीकि नाम से ख्यात हुए और वाल्मीकिरामायण की रचना की।

बंगला के कृत्तिवास रामायण, मानस, अध्यात्म रामायण, भविष्यपुराण प्रतिसर्गर में भी यह कथा थोड़े हेर–फेर से स्पष्ट है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने वस्तुतरू यह कथा निराधार नहीं लिखी । अतएव इन्हें नीच जाति का मानना भ्रममूलक है।

कथा स्रोत एवं ऐतिहासिकता

वाल्मीकि रामायण पर अगणित प्राचीन टीकाएँ हैं, यथा कतक टीका, नागोजीभट्ट की तिलक या रामभिरामी व्याख्या, गोविन्दराज की भूषणटीका शिवसहाय की रामायण शिरोमणि व्याख्या । महेश्वरी तीर्थ की तीर्थ व्याख्या या तत्त्वदीप, कन्दाल रामानुज की रामानुजीय व्याख्या, वरदराजकृत विवेकतिलक, त्र्यम्बकराज मखानी की धर्माकूट व्याख्या रामानन्दतीर्थ की रामायणकूट व्याख्या । इसके अतिरिकत चतुर्थदीपिका, रामायणविरोधपरिहार, रामायण सेतु, तात्पर्यतरणि, शृङ्गारसुधाकर, रामायण सप्तबिम्ब, मनोरमा आदि अनेक टीकाएँ हैं । 'रीडिंग्स इन रामायणश के अनुसार इतनी टीकाएँ और हैं–अहोबल की 'वाल्मीकि हृदयश (तनिश्लोकी) व्याख्या, उनके शिष्य की विरोधभञ्जिनी टीका, मध्वाचार्य की रामायण तात्पर्यनिर्णय व्याख्या, श्रीअप्पय दीक्षितेन्द्र की भी इसी नाम की एक अन्य व्याख्याश प्रवाल मुकुन्द सूरि की रामायणभूषण व्याख्या एवं श्रीरामभद्राश्रम की सुबोधिनी टीका। डॉक्टर एम० कृष्णमाचारी ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर में कई ऐसी टीकाओं का उल्लेख किया है, जिनके लेखकों का पता नहीं है। उदाहरणार्थ–अमृतकतक, रामायणसार दीपिका, गुरुबाला चितरञ्जिनी, विद्वन्मनोरञ्जिनी आदि। उन्होंने वरदराजाचार्य के रामायणसारसंग्रह, देवरामभट्ट की विषयपदार्थ व्याख्या, नृसिंह शास्त्री की कल्पवल्लिका, वेंकटाचार्य की रामायणार्थ प्रकाशिका, वेंकटाचार्य की रामायण कथा विमर्श आदि व्याख्या ग्रन्थों का भी उल्लेख किया है।

इसके अतिरिक्त कई टीकाएँ 'मध्यविलासश वाली प्रति में संग्रहीत हैं। ये ज्ञात सब तो संस्कृत व्याख्याएँ हैं। अज्ञात संस्कृत व्याख्याओं हिन्दी के अनेकानेक द्वैत, अद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैतादि मतावलम्बियों, आर्यसमाज की व्याख्याओं, बंगला, मराठी, गुजराती आदि विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं तथा फ्रेंच, अंग्रेजी आदि अन्य विदेशी भाषाओं में किये गये अनुवाद आदि हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि रामायण के लक्षणों के आधार पर दण्डी आदि ने काव्यों की परिभाषा बतलायी । त्र्यम्बकराज मखानी ने सुन्दरकाण्ड की व्याख्या में प्रायरू सभी श्लोकों को अलंकार, रसादियुक्त मानकर काण्ड नाम की सार्थकता दिखलायी है । सुन्दर का ५ वां सर्ग तो नितान्त सुन्दर है ही । श्रीमखानी ने सभी

के उदाहरण भी दिये हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आदिकवि ने किसी प्राचीन काव्य को बिना देखे ही, किसी ग्रन्थ से बिना सहारा लिये सर्वोत्तम काव्य का निर्माण किया । इनका प्राकृतिक चित्रण तो सुन्दर है ही, संवाद सर्वाधिक सुन्दर हैं। हनुमान जी की वार्तालाप कुशलता सर्वत्र देखते बनती है। श्रीराम की प्रतिपादन शैली, दशरथ जी की संभाषण पद्धतिश किमधिक कहीं–कहीं रावण का भी कथन बहुत सुन्दर है। इन्होंने ज्योतिषशास्त्र को भी परम प्रमाण माना है। त्रिजटा के स्वप्न, श्रीराम का यात्राकालिक मुहूर्त विचार, विभीषण द्वारा लंका के अपशकुनों का प्रतिपादन आदि ज्योतिर्विज्ञान के ज्ञापक तथा समर्थक हैं। श्रीराम का भी वर्णन स्थल–स्थल पर हुआ है। श्री राम जब अयोध्या से चलते हैं तो नौ ग्रह एकत्र हो जाते हैं इससे लंकायुद्ध होता है । दशरथ जी श्रीराम से ज्योतिषियों द्वारा अपने अनिष्ट फलादेश की बात बतलाते हैं ।५ युद्धकाण्डर्ष के श्लोकों में रावणमरण के समय की ग्रहस्थिति भी ध्येय है । युद्धकाण्ड में आयुर्वेदविज्ञान की बातें हैं।"

युद्धकाण्ड में तन्त्रशास्त्र की भी प्रक्रियाएँ हैं । इसमें रावण तथा मेघनाद को भारी तांत्रिक दिखलाया गया है । मेघनाद की सब विजय तन्त्रमूलक है । जब वह जीवित कृष्णछाग की बलि देता है तब तप्त काञ्चन के तुल्य अग्नि की दक्षिणावर्त शिखाएँ उसे विजय सूचित करती हैंकृश्प्रदक्षिणावर्तशिखस्तप्तकाञ्चनसन्निभः ।श रावण भी भारी तान्त्रिक है । उसकी ध्वजा पर (तान्त्रिक का चिह्न) नरशिरकपाल–मनुष्य की खोपड़ी का चिह्न था। किंतु उसके पराभव आदि द्वारा ऋषि वाममार्ग के इन बलिमांस सुरादि क्रियाओं की असमीचीनता प्रदर्शित करते हैं ।

इस तरह हमें महर्षि की दृष्टि में ज्योतिष, तन्त्र, आयुर्वेद, शकुन आदि शास्त्रों की प्राचीनता एवं समीचीनता ज्ञात होती है। वस्तुतः यही परम आस्तिक की दृष्टि होती है । धर्मशास्त्र के लिए तो यह ग्रन्थ परम प्रमाण है ही, अन्य ऐतिहासिक कथाएँ भी बहुत हैं, अर्थशास्त्र की भी पर्याप्त सामग्री है।

प्रत्येक श्लोक ही श्रीराम की अचिन्तय शक्तिमत्ता, लोकोत्तर धर्मप्रियता, आश्रितवात्सल्यता एवं ईश्वरता का प्रतिपादक दीखता है । विभीषण शरणागति के समय यद्यपि कोई भी ऐश्वर्य प्रदर्शक वचन नहीं आया है, पर श्रीराम के अप्रतिम मार्दव कपोत के आतिथ्य सत्कार के उदाहरण देने, परमर्षि कण्डु कल गाथा पढ़ने एवं अपने शरण में आये समस्त प्राणियों को अभयदान देने के स्वाभाविक नियम को घोषित करने के बाद प्रतिवादी सुग्रीव को विवश होकर कहना पड़ा

किमत्र चित्रं धर्मज्ञ लोकनाथशिखामणे ।

यत्र त्वमार्य प्रभाषेथाः सत्त्ववान् सत्पथे स्थितः ।।

लोकनाथ इसमें आश्चर्य नहीं कि आप सत्यपथ पर आरूढ़ हैं।

इसी प्रकार हनुमान जी ने सीताजी के सामने और रावण के सामने जो श्रीराम के गुण कहे हैं, उनमें उन्हें ईश्वर तो नहीं बतलाया किंतु 'श्रीराम में यह सामर्थ्य है कि वे एक ही क्षण में समस्त स्थावर जंगमात्मक विश्व को संहत कर दूसरे ही क्षण पुनरू इस संसार का ज्यों का त्यों निर्माण कर सकते हैंश इस कथन में क्या ईश्वरता का भाव स्पष्ट नहीं हो जाता ? कितनी स्पष्टता है

सत्यं राक्षसराजेन्द्र शृणुष्व वचनं मम ।

रामदासस्य दूतस्य वानरस्य विशेषतः ।।

सल्लिोकान् सुसंहृत्य सभूतान् सचराचरान् ।

पुनरेव तथा स्रष्टुं शक्तो रामो महायशाः ।।

सत्य तो यह है कि तपस्वी वाल्मीकि राम के ही जापक थे। इसी से उन्हें तथा अन्यों को सारी सिद्धियाँ मिली थीं, अतरू इसमें श्रीमन्नारायण को ही काव्यरूप में गाया है। अन्यथा तत्कालीन कन्दमूलफलाशी वनवासी सर्वथा निरपेक्ष तपस्वी को किसी राजा के चरित्र वर्णन से कोई लाभ न था। योगवासिष्ठ में भी, जो उनकी दूसरी विशाल रचना है, उन्होंने गुप्त रूप से श्रीराम का विस्तृत चरित्र गाया है। किन्तु प्रथम अध्याय में तथा अन्यत्र भी यत्र तत्र उनके नारायणत्व का स्पष्ट प्रतिपादन कर ही दिया है । वस्तुतरू प्रेम की मधुरता उसके गूढ़ता में ही है

हैं? कृ परोक्षप्रिया इव हि देवाः, प्रत्यक्षद्विषःश, अतरू महर्षि की यह वर्णन प्रणाली गूढ़ प्रेम ही है, किंतु साधक के लिए वह सर्वत्र स्पष्ट ही है, तिरोहित नहीं है । इस पर प्रायरू सैकड़ों संस्कृत व्याख्याएँ भी इसी के साक्षी हैं।

रामायण के संस्करण

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित आदि रामायण का प्रचार एवं प्रसार समस्त भारतवर्ष में हुआ था, इसके समस्त प्रदेशों में रामायण के पाठों की एक समानता कहीं भी नहीं मिलती है । यह प्रारम्भिक अवस्था में तो लिपिबद्ध स्वरूप में मिलता ही नहीं था। कुछ तो विद्वानों को कंठाग्र रहती थी तथा ऐसे विद्वान घूम घूम कर इसका गान किया करते थे और इस प्रकार की रामायण प्रभावशाली हो इसलिए उसमें कुछ न कुछ इच्छानुसार जोड़ भी देते थे और श्रोतागण ऐसे मिश्रित रामायण को सुनकर धन्य धन्य अनुभव करते थे। आगे के क्रम में जब कुछ विद्वानों ने लेखन कार्य प्रारम्भ किया तो विभिन्न प्रान्तों के गायकों ने अपनी अपनी पद्धति के अनुसार उसके भिन्न भिन्न पाठों, कथापरक श्लोकों को ठीक उसी क्रम में लिखित स्वरूप प्रदान किया । अतरू इस

नवीन परम्परा तथा भौगोलिक भिन्नता के आधार पर भिन्न भिन्न प्रान्तों में भिन्न भिन्न पाठ प्रसिद्ध और प्रचलित होने लगे।

भारत में प्रमुख रूप से तीन पाठों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ जिनमें मुख्यतया (१) दक्षिणात्य संस्करण (२) बंगीय संस्करण (३) पश्चिमोत्तरीय संस्करण उपलब्ध होते हैं।

1.दक्षिणात्य संस्करण

इस संस्करण के पाठ को लोगों ने अधिक मान्य किया । इसका प्रचार भी अन्य पाठों की अपेक्षा अधिक हुआ है। इसका संस्करण एक तो गुजराती प्रिंटिंग प्रेस और दूसरे निर्णय में सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित है । यह अधिक से अधिक जनप्रिय स्वरूप में है।

2.बंगीय संस्करण

इस संस्करण के अन्तर्गत जी. गोरेसियो (पेरिस) तथा कलकत्ता संस्कृत सिरीज से प्रकाशित संस्करण के रूप में प्राप्त होता है । इसी आधार पर इसे कलकत्ता या बंगला का बंगीय संस्करण का नाम प्राप्त हुआ है।

3.पश्चिमोत्तरीय संस्करण

यह संस्करण प्रमुख रूप से दयानन्द महाविद्यालय लाहौर से प्रकाशित माना जाता है । इस संस्करण को काश्मीरी संस्करण के नाम से भी जाना जाता है।

वाल्मीकीय रामायण में प्रमुख रूप से सात काण्ड हैंकृबालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड तथा उत्तरकाण्ड।

सात काण्डों से युक्त रामायण में कुल श्लोकों की संख्या चौबीस हजार है।

चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता

वाल्मीकीय रामायण में प्रत्येक काण्ड की कथा सर्गों में विभाजित है, गीताप्रेस से प्रकाशित रामायण एवं राम की तिलक नाम की व्याख्या से युक्त वाल्मीकि की रामायण, निर्णय सागर प्रेस बम्बई १८८८ में प्रकाशित हुई।

रामायण के समस्त संस्करणों में सर्गों की संख्या एक नहीं है, किसी में कुछ संख्या तो किसी में कुछ । इसी प्रकार प्रत्येक पाठ या संस्करण में कुछ श्लोक ऐसे भी प्राप्त होते हैं जो कि दूसरे संस्करण में नहीं हैं।

प्राय: सभी पाठों में श्लोकों की एक तिहाई संख्या केवल एक ही पाठ में प्राप्त होती है, इससे अलग प्रकार के जो श्लोक तीनों पाठों में प्राप्त होता है, उसका पाठ एक प्रकार से नहीं मिलता है। इनमें प्रायरू श्लोकों

का क्रम भी स्थल स्थल पर भिन्न प्रिकार का होता है। परन्तु यदि इस सम्यक् प्रकार से तीनों पाठों का अध्ययन करते हैं, तो इस निर्णय पर निरूसंदिग्ध रूप से पहुँच जाते हैं कि तीनों पाठों में प्राप्त होते हैं, उनका पाठ एक सा नहीं मिलता है।

इस प्रकार के श्लोकों का क्रम भी अधिकतर स्थानों पर भिन्न–भिन्न होता है । परन्तु यदि हम तीनों पाठों का अलग–अलग अध्ययन करते हैं तो इस निर्णय पर निरूसंदिग्ध रूप से पहुँचते हैं कि तीनों पाठों का कथानक प्रायरू एक ही क्रम में होता है । रामायण के विभिन्न संस्करणों की कथानक दृष्टि से थोड़ा बहुत भिन्न है वह मौलिक रूप से मौलिक नहीं प्रतीत होता है अपितु गौण ही कहा जा सकता है । यह वृत्तान्तों का भी उल्लेख किसी पाठ में होता है तो किसी में उसका अस्तित्व नहीं प्राप्त होता है।

रामायण के प्रक्षिप्त अंश

आदिकवि वाल्मीकि की रचना रामायण संस्कृत साहित्य का आर्ष ग्रन्थ है । इसकी लोकप्रियता के कारण ही हमेशा उसमें प्रक्षिप्तांशों का समावेश होता रहा है। प्रारम्भ में कुशीलवों द्वारा यह रचना लोगों को सुना दी जाती थी। अतरू उन्होंने लोगों की रुचि के अनुरूप समय समय पर कुछ कुछ अंशों को और जोड़ा जिसके परिणामतरू आज रामायण २४ सहस्र श्लोकों की रचना के रूप में प्राप्त होती है।

विन्टरनित्स ने बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड को प्रक्षिप्त मानते हुए विभिन्न तर्क दिये हैं। किन्तु उनका यह मत समुचित प्रतीत नहीं होता । रामायण के बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में नारद ने वाल्मीकि मुनि को जो संक्षेप में रामकथा सुनायी है उसमें बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड का वर्णन प्राप्त होता है । हनुमान द्वारा सीता को जब रामकथा सुनायी गयी है तब सुन्दरकाण्ड के उस ३१वें सर्ग में भी महाराज दशरथ और श्रीराम के ठीक बाद अयोध्याकाण्ड का वर्णन शुरू हो जाता है । प्रायरू सभी आधुनिक इतिहासकार इस महाकाव्य काल को वैदिकयुग और बौद्धकाल के मध्य में स्वीकार करते हैं। समस्त मतों का निरीक्षण करने के पश्चात

मौलिक या मूल रामायण का समय ई०पू० तीसरी शताब्दी तथा वर्तमान प्रचलित रामायण का समय दूसरी शताब्दी ई० से अधिक समीचीन, उपयुक्त एवं तात्पर्यपूर्ण प्रतीत होता है।

चौथे सर्ग में जो २४ समग्र श्लोकों से युक्त रामायण काव्य के लिए बनाई गई अनुक्रमणिका भी बाद की प्रतीत होती है । इसका उद्देश्य बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के कथानक को रामायण में जोड़ने से है । ६वें सर्ग से लेकर १२वें सर्ग तक की कथा वर्णित है, वह मात्र ८वें सर्ग की पुनरावृत्ति ही प्रतीत होती है जिसमें चार पुत्रों के उत्पन्न होने का आश्वासन देते हैं। इसके बाद १५ से १७वें सर्ग तक जो पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन है, यह स्पष्ट रूप से प्रक्षिप्त प्रतीत होता है। क्योंकि १४वें सर्ग में ब्राह्मणों के दान देने के पश्चात पुत्र प्राप्ति का आश्वासन मिल जाने पर पुत्रेष्टि यज्ञ का महत्व नहीं होता है।

पौराणिक कथाओं का गङ्गावतरण सर्ग (४२–४४) एक स्वतंत्र काव्य था, जो बाद में बालकाण्ड में रखा गया। विश्वामित्र की कथाश में आशुश्लोकों का बाहुल्य उसमें एक स्वतंत्र रचना सिद्ध करती है ।२ बालकाण्ड में कुश तथा उनके पुत्रों का वर्णन, कुश नाम के सौ पुत्रियों का वर्णन व कौशिकी वृत्तान्त (सर्ग ३४), गंगा की उत्पत्ति (स० ३५), शिव पार्वती की सुरत क्रीड़ा (सर्ग ३६), गंगा से कार्तिकेय की उत्पत्ति (सर्ग ३७), सगर तथा उनके पुत्रों का वृत्तान्त, (सर्ग ३८ ४१) समुद्रमंथन (सर्ग ४५), दिति, सुमति (सर्ग ४६–४८) आदि प्रसंगों का राम के कथानक से कोई सम्बन्ध नहीं है और इनका वर्णन अन्य काण्डों में नहीं प्राप्त होता है। बालकाण्ड में कुछ ऐसे वर्णन प्राप्त होते हैं, जिनका सम्बन्ध बाद के काव्यों काण्डों में समुचित प्राप्त नहीं प्रतीत होता है । जैसेकृबालकाण्ड में लक्ष्मण और उर्मिला के विवाह का वर्णन (सर्ग ७३) में वर्णित है, किन्तु अरण्यकाण्ड शूर्पणखा के प्रसंग में लक्ष्मण को अविवाहित कहा गया है (सर्ग १८)।

फादर बुल्के कहते हैं कि बहुत सम्भव है कि वाल्मीकि कृत रचना में अयोध्या, दशरथ तथा उनके पुत्रों के परिचय के बाद अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु का वर्णन प्रारम्भ हुआ है।

प्रक्षेपों से रहित बालकाण्ड का प्रारम्भिक रूप जिसमें क्रमशरू रामकथा की भूमिका, अयोध्या वर्णन, दशरथ का अश्वमेध, रामजन्म और ताड़का बध, विश्वामित्र यज्ञ रक्षा, राम विवाह, अयोध्या में वापस आगमन माना जा सकता है । अयोध्या काण्ड में भी प्रक्षिप्त अंशों की प्राप्ति होती है । अयोध्याकाण्ड के प्रथम सर्ग में १ से ३५ श्लोक प्रक्षिप्त हैं । क्योंकि इसमें बालकाण्ड के अन्तिम श्लोकों का पुनरू वर्णन किया गया है। मुनिकुमार प्रसंग (३३–३४) अधिकतर वर्णन प्रक्षिप्त है । डॉ० याकोबी सर्ग ४१ प्रक्षिप्त मानते हैं क्योंकि राम के प्रस्थान के १. फादर कामिल बुल्के – रामकथा की उत्पत्ति व विकास, पृ० २८२ अनन्तर चित्रकूट तक का वर्णन हुआ था । सर्ग ६६–६३ में दशरथ मृत्यु से भरत के चित्रकूट में आगमन के पर्यन्त के वर्णन में अनेक वर्णन पुनरू प्राप्त होते हैं । यह कथा अधिक विस्तृत रूप में वर्णित है परन्तु मूल वाल्मीकीय रामायण का वर्णन इसकी अपेक्षा कम था । राम द्वारा भरत से पूछे गये राजनीति विषयक वर्णन वाला १००वां सर्ग पूर्णतरू प्रक्षिप्त है।

रामायण की उपजीव्यता

रामायण और महाभारत भारतीय कवियों के निरन्तर उपजीव्य माने गये हैं। ये दोनों ग्रन्थ भारतीय वाङमयके आर्ष ग्रन्थ हैं। इसके अन्तर्गत भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के समस्त उच्चादर्शों का सम्यक् समावेश निहित है। युग युगान्तर एवं जन्म जन्मान्तर से इसने अपनी अमृतवाणी प्रमाणों एवं तपःपूत ऋषियों द्वारा यहाँ के जाति जीवन को सम्यक् एवं भारतीय प्रेरणा प्रदान की है । अतएव कवियों ने सदा से ही रामायण एवं महाभारत को अपने काव्य की विषयवस्तु बनाया है। इन दोनों कृतियों का आधार ग्रहण कर अपने काव्य का निर्माण करने से उन कवियों का विषय साहित्य या संकीर्णता किसी भी प्रकार नहीं पोषित होती अपितु इससे उनकी आदर्शवादिता एवं लोकतंत्रात्मक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। कवि इन प्राचीन एवं महान साहित्य में

वर्णित आदर्श महापुरुषों की जीवन गाथाओं को ग्रहण कर अपनी कृतियों में उसको संजो पर समाज के जीवन को उन आदर्शों से अनुप्राणित करने का सफल प्रयास करता है। रामायण एवं महाभारत के सम्बन्ध में काउसियांग का विचार है कि– श्भारतीय लेखकों के पास सामग्री लेने के लिए रामायण एवं महाभारत महाकाव्यों के रूप में हैं, जो संसार के काव्य हैं, एक अक्षय निधि थी। वाल्मीकि रामायण प्रायरू समग्र कवि समाज का उपजीव्य है । इस ग्रन्थ से सभी लोग भलीभाँति परिचित होते हैं । अतरू कवि कथा निर्माण के मर्मस्थल के विश्वास में तथा पात्रों के चारित्रिक मूल्यांकन में अधिक दत्तचित्त हो जाता है । इस प्रकार दर्शकों की सुविधा का विचार कर संस्कृत साहित्य में कवियों ने रामायणादि के प्रसिद्ध कथावस्तु को ग्रहण कर नाटक के पात्रों के प्रति दर्शकों के मन में उसकी समस्त जिज्ञासाओं का समाधान किया हे ।

वाल्मीकि ने अपने काव्य में एक ही नायक को केन्द्रविन्दु मान कर काव्य को सजाया एवं संवारा है । इसके सुसंगठित एवं कवित्वमय रूप को देखकर परवर्ती कवियों ने इसका अनुकरण किया। भारत में ऐसा कोई कवि नहीं था, जिसने महाकवि वाल्मीकि के अगाध काव्य भंडारश से प्रेरणा न प्राप्त की हो । अनेकानेक कवियों ने इसके कार्यविषय पर अपनी कल्पना एवं प्रतिभा की साथ आती है।

इस जनप्रिय रचना ने संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवियों को अपनी गंगा में पूर्णतरू आलोड़ित कराया तो अन्य कवियों की बात ही क्या है ? कालिदास ने अपने को आदिकवि की पावन रचना में पूर्णतरू सराबोर कर दिया , जो उनके अध्ययन से प्राप्त होता है । भवभूति, राजशेखर, मुरारि आदि नाटककार पूर्णतरू आदिकवि एवं उनकी रचना के प्रति श्रद्धावनत हैं।

बौद्ध होते हुये भी अश्वघोष ने श्बुद्धचरितश के सिद्धार्थ का चित्रण रामायण के राम के आधार पर ही समायोजित किया है । भारवि तथा बाण प्रभृति कवियों पर रामायण का प्रभाव परिलक्षित होता है।

रामायण की उपजीव्यता के सम्बन्ध में श्रीरामधारी सिंह दिनकर का विचार है कि– श्कोई आश्चर्य नहीं है कि कालिदास से लेकर आज तक के सभी भारतीय भाषाओं के कवि रामायण और महाभारत की कथाओं पर काव्यरचना करते रहते हैं।

रामायण लौकिक और पारलौकिक जीवन के सर्वोच्च आदर्शों का कोश होने के कारण भारत में आज भी अपनी नैतिकता एवं सदाचार का निकेतन बनी हुई है। यह कृति समस्त व्यक्ति को उदात्त आदर्शों के प्रति उन्मुख करती है। रामायण का आधार ग्रहण कर आधुनिक युग में भी कविगण श्रेष्ठ कृतियों का निर्माण कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का विचार दर्शनीय है श्वे दोनों महाकवि धन्य हैं जिनके नाम तो काव्य के महासागर में लुप्त हो गये किन्तु जिनकी वाणी आज भी करोड़ों नर नारियों द्वारा निरन्तर प्रख्यान

धाराओं से शक्ति व शान्ति पहुँचाती फिरती है और सैकड़ों प्राचीन शताब्दियों की उपजाऊ मिट्टी को दिनों दिन बहाते हुए लाकर भारत की चित्त भूमि को उर्वरा बनाए हुए है।

सत्यं, शिवं तथा सुन्दरं की भावना से ओतप्रेत इस काव्य ग्रन्थ के सम्बन्ध में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत भी द्रष्टव्य हैकृ श्संसार के समूचे साहित्य में इस प्रकार का लोकप्रिय काव्य जातीय ग्रन्थ नहीं है । समूचा भारतवर्ष एक स्वर से इसे पवित्र आदर्श काव्यग्रन्थ मानता है और सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का आधा इस महाकाव्य के द्वारा अनुप्राणित है । काव्य के आरम्भ में भविष्यवाणी की गयी है जो अक्षरशः सिद्ध हुई है । रामायण में उपजीव्यता के सम्बन्ध में श्परं कथीनामाधारम्श आदि वर्णन द्वारा यह स्पष्ट होता है कि वह कवियों का आधार सिद्ध होगा।

रामायण की रचना अवधि

रामायण संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य माना जाता है, तथा उसके रचयिता आदिकवि । इस महाकाव्य की रचना कब हुई, यह आज भी विवादास्पद है ।कतिपय विद्वान् इसे राम जन्म के पूर्व की रचना मानते हैं। परन्तु बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड से यह विदित होता है कि वाल्मीकि राम के समकालिक थे। परन्तु ये दोनों काण्ड प्रक्षिप्त माने जाते हैं। ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है जिससे राम का समय निश्चित किया जा सके। रामायण के दो रूप माने जाते हैंकृ एक आदिकवि कृत आदि रामायण और दूसरा उसका परिवर्धित एवं प्रचलित रूप । यह भी धारणा है कि आदि रामायण और रामायण को परिवर्धनों के साथ प्रचलित रूप में आने के लिए पर्याप्त समय लगा होगा ।

पाश्चात्य विद्वान् सर विलियम जॉन आदि रामायण का समय २०२९ ई० पू०, टोड ११०० ई० पू०, वेन्टलेय ९५० ई०पू० तथा मोरसियो १३वीं शताब्दी पूर्व स्वीकारते हैं।

डॉ० याकोबी रामायण को महाभारत तथा बुद्ध से पूर्व का मानते हैं। अपने मत की पुष्टि उन्होने रामायण के वाह्य एवं आन्तरिक सभी साक्ष्यों को प्रस्तुत किया है । वे ८०० ई०पू० से ५०० ई०पू० तक का मानते हैं । एम० विन्टरनित्ज, डॉ० याकोबी के इस मत से सहमत हैं कि प्रचलित रामायण महाभारत से प्राचीन है। लेकिन वे बौद्ध धार्मिक ग्रन्थ त्रिपटिक के रामायण का अभाव मानते हैं। उन्होंने प्रचलित रामायण का समय ईसा की द्वितीय शताब्दी तथा आदि रामायण का समय ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी स्वीकार किया है।

ए०मैकडानल ने रामायण को महाभारत से प्राचीन सिद्ध करने के लिए डॉ० याकोबी जैसे तर्क दिये हैं। परन्तु आदि रामायण को बुद्ध से पूर्व का माना है ।

अन्त में छन्दःशास्त्र की दृष्टि से पालि गाथाओं तथा रामायण के श्लोकों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर उन्होंने वर्तमान रामायण का समय द्वितीय शताब्दी तथा आदि रामायण का समय चतुर्थ शताब्दी ई० स्वीकार किया है, जो बुल्के के रामकथा में भी वर्णित है ।

ए०बी० कीथ आदि रामायण का समय ई०पू० चतुर्थ शताब्दी तथा वर्तमान रामायण का ई०पू० द्वितीय शताब्दी मानते हैं। डॉ० बुल्के के विन्टरनित्ज के पक्ष में अपना मत देते हुए आदि रामायण का समय ई० पू० तृतीय शताब्दी स्वीकार किया है।

श्लेगल रामायण का रचनाकाल ११०० ई० पूर्व मानते हैं। भारतीय विद्वानों ने रामायण काल पर इस प्रकार विचार किया है । वरदाचार्य का कथन है कि राम त्रेता युग में हुए, जो ईसा से ८६७१०० लाख वर्ष पूर्व समाप्त हुआ । वाल्मीकि राम के समकालिक थे। अतरू रामायण की रचना का समय पूर्वोक्त है ।५ चिन्तामणि विनायक वैद्य का विचार है कि रामायण उस काल की रचना है जब यज्ञ करना आर्यों को विशेष अभीष्ट था, जब बौद्ध धर्म का पता नहीं था, जब वैदिक देवताओं की पूजा होती थी ।जब स्त्रियाँ वेद पढ़ती थीं, जब क्षत्रिय ज्ञान में ब्राह्मण को हरा देते थे और ब्राह्मण धनुर्विद्या में क्षत्रिय को। इन्होंने वर्तमान रामायण का समय ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी और आदि रामायण को बुद्ध के पूर्व स्वीकार किया है। ए०डी० पुसालकर रामायण की रचना ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी में मानते डॉ० सत्यव्रत, रामायण का रचनाकाल पाणिनि के बाद का स्वीकार करते हैं । इसे भाष्यकार पतंजलि ने भी कहा है कि उस समय आर्यावर्त में सभ्यता थी।

पतंजलि बताते हैं कि उस समय आर्यावर्त में शिष्ट भाषा को ही स्वीकार किया जाता था। श्री कृष्ण कुमार ओझाश तथा डॉ० रामाश्रय शर्मा ने अनेक प्रमाणों के आधार पर रामायण का रचनाकाल बुद्ध से पूर्व सिद्ध किया है ।

रामायण के उपलब्ध तीनों पाठों में भी पर्याप्त अन्तर मिलता है । अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड तक की कथा जिसे वाल्मीकि की मूल कृति कहा जाता है, शेष अन्य काण्ड के बाद की रचना माना जाता है । अतरू यह भी मतैक्य नहीं है । इस तरह रामायण का समय निश्चित करने के लिए केवल दो आधार रह जाते हैं एक बुद्ध, दूसरे पाणिनि । रामायण में एक स्थल पर राम जाबालि के नास्तिकवाद का खण्डन करते हुए बुद्ध को चोर एवं नास्तिक कहते हैं। दूसरे स्थल पर श्रमणा तथा श्रमणी शब्द का प्रयोग है । परन्तु मूल रामायण बुद्ध एवं बौद्ध धर्म के प्रभाव से पूर्णतरू असंपृक्त है। क्योंकि रामायण में यज्ञ, बलि, वैदिक देवताओं का पूजन, बौद्ध प्रभाव से बहुत दूर ले जाता है । राम का चरित्र भी इस प्रभाव से पूर्णतरू अछूता है। रामायण के कतिपय अन्तरूसाक्ष्य भी इसे बुद्ध से पूर्व का सिद्ध करते हैं । रामायण में अयोध्या कोसल प्रदेश की राजधानी है ।

जैन बौद्ध और पतंजलि अयोध्या का नाम साकेत देते हैं। रामायण में मिथिला एवं विशाला दो पृथक् नगर कहे गये हैं। मिथिला पर राजा जनक का राज्य था और विशाला पर राजा सुमति का। भगवान महावीर और बुद्ध के समय, ये दोनों नगर एक हो गये थे और इनका सम्मिलित नाम वैशाली था। इसी वैशाली के कुण्ड ग्राम में भगवान महावीर का जन्म हुआ था। महावीर का समय ५६८ ई० पू० माना जाता है।

रामायण में कौशाम्बी, धर्मारण्य, गिरि तथा काम्पिल्या का उल्लेख है । परन्तु पाटलि पटना का नाम नहीं है । इस प्रदेश की सीमापवर्ती नदी शोण का वर्णन रामायण में मिलता है । इस नदी के तट पर विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के साथ एक रात्रि व्यतीत करते हैं। पाटलिपुत्र का निर्माण बिम्बसार के पुत्र अजातशत्रु ने ४४३–४६२ ई०पू० में करवाया था। इसी राजा ने बुद्ध की अस्थियों को राजगृह के एक स्तूप में स्थापित किया था। इसकी संरक्षकता में बौद्ध भिक्षुओं की प्रथम समिति बुलायी गयी थी ।

प्रमाण रामायण को बुद्ध एवं महावीर से पूर्ववर्ती दर्शाते हैं, फिर भी इस विषय पर विद्वानों का वैमत्य हो सकता है। पाणिनि के सूत्रों में कौशल्य कैकय, सरयूश आदि का उल्लेख है । इससे यह लगता है कि वाल्मीकि पाणिनि के परवर्ती थे। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि रामायण में जो अपाणिनीय प्रयोग 'कुर्मिश ददि्मश १ इत्यादि मिलते हैं वे वाल्मीकि को कैसे स्वीकृत था तथा वे पाणिनि के हैं या नहीं, परन्तु निष्कर्ष यही निकलता है कि आदि रामायण का समय ११वीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी ई०पू० से तृतीय शताब्दी ई०पू० के मध्य । प्रचलित रामायण का समय ई० पू० से प्रथम शताब्दी से लेकर तृतीय शताब्दी तक माना जाता है । वस्तुतरू आदि रामायण भगवान बुद्ध एवं पाणिनि से पूर्व का है और प्रक्षिप्त अंशों सहित प्रचलित रामायण निश्चित रूपेण परवर्ती है ।

निष्कर्ष

रामकथाश्रित नाटकों की परम्परा भास कृत प्रतिमा नाटक तथा अभिषेक नाटक प्रमुख हैं जिसमें प्रति नाटक में भास के स्थितिकाल में सामान्य जनों के विश्वास प्रचलित था कि मृत्युकाल में व्यक्ति को कुछ दृष्टिगोचर होता है । प्रतिमा में दशरथ को जो तीन पूर्वजों का दर्शन होता है । यह हो सकता है कि मृत्युकालीन दृ ष्टिदोष या मानसिक भ्रम हो परन्तु भास ने इसके दशरथ के यथार्थ अनुभव के रूप में ही प्रस्तुत किया है । मृत्युकाल में दशरथ को पूर्वजों का दर्शन करा कर भास ने सांकेतिक या प्रतीकात्मक रूप में दशरथ के मृत्यु की सन्निकटता प्रदर्शित किया है । साथ ही इस कल्पना द्वारा नाटककार ने तृतीयांक के प्रतिमागृह के प्रसंग का पूर्व उपदेश किया है क्योंकि प्रतिमागृह में उन्हीं पूर्वजों की प्रतिमाओं में दशरथ की प्रतिमा स्थापित है, जिनका दर्शन दशरथ को मृत्यु के पूर्व हुआ था। तृतीयांक में प्रतिमागृह की संयोजना अत्यधिक संयोजित रीति से की गई है। यह वर्णन ही सम्पूर्ण नाटक की केन्द्रभूमि है। यद्यपि इस घटना का रामायण में कहीं भी उल्लेख प्राप्त होता है तथापि नाटककार ने इस शोभन कल्पना के माध्यम से घटनाओं को अत्यधिक प्रदर्शित

किया है । प्रतिमागृह में द्वारा समस्त राजाओं की प्रतिमाओं का दर्शन कराते हुए महाराज दशरथ के मरण की सूचना स्वयं ही प्राप्त हो जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] प्राचीन भारत का इतिहास भरतमुनि डॉ० यदुनाथ मिश्रा एवं डॉ० देवी शरण शर्मा राजबली पाण्डेय – जयशंकर मिश्र कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव युनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद

[2] प्राचीन भारत एल०पी० शर्मा लक्ष्मीनारायण लाल अग्रवाल आगरा।

[3] प्राचीन भारतीय साहित्य विन्टरनित्स अनु० लाजपतराय

[4] प्राचीन भारतीय लोकधर्म डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

[5] प्राचीन भारतीय सामाजिक आर्थिक संस्थाएं– डॉ० कैलाशचन्द्र जैन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल ।

[6] प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास – डॉ० रामशंकर त्रिपाठी

[7] प्राचीन भारत की सामाजिक संस्कृति – डॉ० रामजी उपाध्याय बेनी माधव इलाहाबाद

[8] प्रियदर्शिका (१) काले संस्करण (२) रामचन्द्र मिश्र

[9] प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् भास मोतीलाल बनारसी दास डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द्र

[10] प्राचीन लेखमाला द्वितीय भाग (१८६७)– ओझा, १८६७ का संस्करण